

---

.. argalAstotram ..

॥ अर्गलास्तोत्रम् ॥

Document Information



---

Text title : argalAstotra from Durga Spatashati or Devi Mahatmya  
File name : argalaastotra.itx  
Location : doc\_devii  
Author : Traditional  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : Smt. K. Shankaran (kapilasankaran at yahoo.com)  
Proofread by : Sunder Hattangadi sunderh at hotmail.com  
Description-comments : Verses for devi durga  
Latest update : April 21, 1998, July 13, 2008  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---


Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 2, 2016

*sanskritdocuments.org*

---



## ॥ अर्गलास्तोत्रम् ॥

॥ श्री ॥

श्रीयष्टिकाध्यानम्

ॐ बन्धूककुसुमाभासां पञ्चमुष्ठाधिवासिनीम् ।

स्फुरय्यन्द्रकलारत्नमुकुटां मुष्णमालिनीम् ॥

त्रिनेत्रां रक्तवसनां पीनोन्नतघटस्तनीम् ।

पुस्तकं याक्षमालां य वरं याभयकं कृमात् ॥

दधतीं संस्मरेन्नित्यमुत्तराम्नायमानिताम् ।

अथवा

या यष्टी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी

या धूम्रेक्ष्णायष्टमुष्णमथनी या रक्तबीजशनी ।

शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा

सा देवी नवकोटिभूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुवृषिः, अनुष्टुप् छन्दः,  
श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतिपाठाङ्गत्वेन  
जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चष्टिकायै

मार्कण्डेय उवाच ।

ॐ जय त्वं देवि यामुष्टे जय भूतापहारिणि ।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।

दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

मधुकैटभविध्वंसि विधातृवरदे नमः ।

३पं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥

महिषासुरनिर्नाशि लक्ष्म्यानां सुभदे नमः ।

३पं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥

धूम्रनेत्रवधे देवि धर्मकामार्थदायिनि ।

३पं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥

रक्तबीजवधे देवि यष्टमुष्णविनाशिनि ।

३पं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥

निशुम्भशुम्भनिर्नाशि त्रिलोक्यशुम्भे नमः ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥  
 वन्दिताङ्गियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥  
 अचिन्त्यरूपयरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥  
 नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या यापणो दुरितापहे ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥  
 स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां यष्टिके व्याधिनाशिनि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥  
 यष्टिके सततं युद्धे जयन्ति पापनाशिनि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥  
 देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुभम् ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥  
 विघेहि देवि कल्याणं विघेहि विपुलां श्रियम् ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥  
 विघेहि द्विषतां नाशं विघेहि बलमुच्यते ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥  
 सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टयरण्डम्बिके ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥  
 विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तञ्च मां कुरु ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥  
 देवि प्रयष्टोर्दण्डैत्यर्पनिष्ठीनि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥  
 प्रयष्टैत्यर्पणे यष्टिके प्रणताय मे ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥  
 यतुर्भुज यतुर्वक्त्रसंसुते परमेश्वरि ।  
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥  
 कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।

३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥  
हिमायलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।  
३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥  
छन्नाणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।  
३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥  
देवि लक्तज्जोद्धामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।  
३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २४ ॥  
भार्या मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।  
३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २५ ॥  
तारिणि दुर्गसंसारसागरस्यायलोद्धवे ।  
३५ं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २६ ॥  
छंदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।  
सप्तशतीं समाराध्य वरमाप्नोति दुर्लभम् ॥ २७ ॥  
॥ छति श्रीमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

---

Encoded by K. Shankaran (kapilasankaran at yahoo.com)

Proofread by Sunder Hattangadi sunderh at hotmail.com

---

.. argalAstotram ..

was typeset on August 2, 2016

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

